भूमिका ।

यह पुस्तक इस कारण बनाई गई है कि थोड़ा थोड़ा हाल तीर्थों का जहां हिन्दू लोग यात्रा को जाते हैं या और बड़े बड़े हिन्दुस्तान देश के नगरों का उनकी खबर के वास्ते दिया जावे, जो बातें इस में लिखी हैं भरोसे वाली जगहों से ली गई हैं और आशा है कि जिन लोगों ने इन तीर्थों को पहिले नहीं देखा या अंग्रेज़ी किताबें नहीं पढ़ सक्ते उनको यह पुस्तक बहुत काम देगी ॥

१८६० के रेलवे ऐक्ट ६ का और रेल के उन कायदों का जो आज कल जारी हैं खुलासा लोगों को खबर के वास्ते इस पुस्तक के पीछे दिया गया है ॥

बड़े बड़े स्टेशनों पर तीसरे दर्जे के टिकट घर अकसर हर वक्त खुले रहते हैं और जहां ऐसा नहीं वहां गाड़ी के वक्त से बहुत पहिले खोल दिये जाते हैं, बड़े शहरों में शहर के अन्दर भी टिकट घर खोले गये हैं जहां टिकट मिलसक्ते हैं और असबाब की भी बिलटी बन सक्ती है ऐसे स्टेशनों के नाम इस पुस्तक के पीछे लिखे हैं बाज़े स्टेशनों पर टिकट घर के पास बदमाश लोग भी फिरा करते हैं उन की मारफ़त टिकट कभी नहीं लेना चाहिये यह लोग मुसाफ़िरों को धोखा देते हैं और उनका रुपया खाजाते हैं ॥

तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों के वास्ते जो गाड़ियां नई बनती हैं उन में टट्टी का इन्तज़ाम किया जाता है और गाड़ी के गार्ड के साथ ज़रूरत के वक्त बातचीत करने का सामान भी रक्खा जायगा ॥

हर एक स्टेशन से किसी बड़े स्टेशन का फ़ासला और तीसरे दर्जे का किराया दिया है इस से मुसाफ़िरों को बहुत कुछ मदद मिल

सकती है । थोड़ी रेलों के सिवाय सब रेलों पर पहिले दूसरे और ड्योढे दर्जे का किराया एक आना। आध आना और एक पैसा फ़ी मील के हिसाब से लिया जाता है॥

वक़्त की कमी के सबब यह पुस्तक ऐसी पूरी पूरी ठीक नहीं बनी जैसा कि ख़ियाल था इसी सबब से नक़्शा भी अंग्रेज़ी का ही लगा दिया गया है अगली बार यह सब कमी पूरी की जावेगी॥

अगाशो।

अहाता बम्बई के ज़िला थाना तहसील बसीन में नगर है। बी० बी० ऐन्ड सी० आई० रेलवे (बम्बई की छोटी लैन) के स्टेशन बिरार से ४॥ मील पश्चिम की ओर है। रेलवे स्टेशन से इस नगर को पकी सड़क जाती है। यहां पुर्तगाल वालों का एक मदरसा है और भवानीशंकर का एक मन्दिर है जो सन् १६६१ ईस्वी में बनाया गया था इस मन्दिर के लिये सरकार से ७५) रुपये साल मिलते हैं जहां न्हाने की जगह है कहते हैं कि इस जगह नहाने से शरीर की खलड़ी के सब रोग दूर होजाते हैं॥

केले और पान का बड़ा ब्योपार होता है सूखा हुआ केला यहां का सारे ज़िले में अच्छा होता है। बिरार स्टेशन से अगाशा को तांगे और गाड़ियां जाती हैं अगाशी में देशी मुसाफ़िरों के वास्ते एक धर्मशाला है। बम्बई से बिरार ३८॥ मील और तीसरे दर्जे का किराया ॥)। आने हैं॥

अगर तारा।

बङ्गाल के ज़िला तिरहुत के बनगांव गांव में अगरतारा देवी का मन्दिर और बड़े तीर्थ की जगह है इस का हाल देवी पुराण में देखो।

यह जगह जहाजों के स्टेशन गांगरी से १५ मील है ईस्ट इण्डियन रेलवे के मुंघेर स्टेशन से यहां जाते हैं कलकत्ते से देहली को आते हुये मुंघेर १६७ मील है और तीसरे दर्जे का किराया ३।~)॥। लगता है॥

अगरतारा में कोई धर्मशाला नहीं यात्रियों को मन्दिर में ठहरना चाहिये या अपना और कोई बन्दोबस्त करें ॥

अगरतुला पुराना।

अहाता बङ्गाल की रियास्त तिप्परा में एक गांव है और रियास्त को इस वक्त की राजधानी से चार मील के फ़ासले पर है। सन् १८४४ तक राजों का स्थान रहा पीछे नया नगर राजधानी बनाया गया। पुराने महिलों के खंडर और राजा और रानियों की छतरियां अब तक बाकी हैं। महिल के पास एक छोटासा मन्दिर है जिसको पहाड़ी लोग बड़ा पवित्र मानते हैं इस मन्दिर में सोने चांदी और दूसरी धातों के १६ सिर बने हुए हैं जो तिप्परा के रक्षा करने वाले देवताओं की मूर्ती हैं जो कोई मन्दिर के पास से वहां के लोगों में से गुज़रे तो उसको ज़रूर मत्था टेकना उचित होता है ॥

नये अगरतुला में कालेज, महाराजा साहिब का हाईस्कूल महारानी साहिबा की पुत्री पाठशाला और संस्कृत स्कूल हैं। यहां सराये या धर्मशाला कोई नहीं। अगरतुला जिस को लोग मूगरा कहते हैं आसाम बङ्गाल रेलवे पर चिट्टागांग से १२२ मील और राजधानी से ६ मील है तीसरे दर्जे का किराया १॥।≤)॥ है ॥

बैल गाड़ियां पालकियां और घोड़ा गाड़ियां अखौड़ा स्टेशन पर जो इस नगर से ६ मील है स्वारी के लिये मिलती हैं पर वर्षा के दिनो में मूगरा स्टेशन पर उतर के और किश्ती में बैठकर अगरतुला जाना चाहिये अखौड़ा चिट्टागांग से १२५ मील और तीसरे दर्जे का किराया १॥।≤)। है।

अगर द्वीप।

भागीरथी नदी में टापू है और बङ्गाल अहाते के ज़िला नदिया में ईस्टर्न बङ्गाल लैन के बेथुवाधारी स्टेशन से ८ मील के फ़ासले पर वाक़े है॥

४०० या ५०० बर्ष गुज़रे कि घोस ठाकुर जो नवा द्वीप के महा चेतान्या का चेला था गोपीनाथ कृष्ण जी की.मूर्त्ति यहां लाया था उसकी यादगारी में मार्च के महीने में डोल यात्रा से ठीक ११ दिन पीछे ज़िले का सबसे बड़ा मेला होता है यह मेला एक हफ़ते तक रहता है और २५ हज़ार के क़रीब यात्री इस में आते हैं॥

अगर द्वीप में कोइ धर्मशाला या सराय नहीं पर मेले के दिनों में यात्रियों के आराम के लिये चटाई की झोंपड़ियां बना देते हैं स्टेशन पर सवारी के लिये बैलगाड़ियां मिलती हैं॥

बेथुवाधारी स्टेशन रानीघाट जंकशन से ३३ मील है और तीसरे दर्जे का किराया।≋) लगता है॥

अच्छल।

पंजाब के ज़िला गुर्दासपुर तहसील बटाला में एक गांव है और बटाला स्टेशन से जो नार्थ वैस्टर्न रेलवे पंजाब लैन पर है ३ मील के फ़ासले पर है। इस गावों में शिवजी का एक बड़ा सुन्दर मन्दिर है जिसपर नौमी और दसमी का मेला नवम्बर में लगता है जो दो दिन तक रहता है इस मेले में दस हज़ार के लगभग लोग आते हैं अप्रैल के महीने में बैसाखी का मेला भी यहां बड़ा भारी होता है यह मेला भी दो दिन तक रहता है और दस हज़ार लोग इस में आते हैं॥

बहड़ायच ।

अवध के ज़िला बहड़ायच्च का सब से बड़ा शहर है । पटना रेलवे ब्रांच यहां पर खतम होती है यहां सब से बढ़कर देखने के लायक़ जगह मसऊद का मज़ार है यह महात्मा बड़े शूरमा और भगत गुजरे हैं। मज़ार के खर्च उनके चेलों की औलाद के ज़िम्मे है मारिच के महीने मे यहां एक बड़ा मेला लगता है और करीब डेढ़ लाख हिन्दू और मुसलमान इस मौके पर इकट्ठे होते हैं उन के बड़े बड़े चेलों के मज़ारों के भी दर्शन किये जाते हैं इस मुकाम पर एक मशहूर खानगाह अब तक मौजूद है जो कि मुलतान के किसी महात्मा ने १६२० में कायम की थी॥

दौलतखाना जो किसी ज़माने में खूबसूरत मकानों की कतार थी नवाब आसफउद्दौला ने बनवाया था यहां हर साल मालमण्डी भी लगती है॥

बहड़ायच्च में एक डाक बंगला और सराये है सवारी मिलती है॥

बहड़ायच्च बंगाल ऐंड नार्थ वेस्टर्न रेलवे पर गोंडा जंकशन से ३८ मील है तीसरे दरजे का किराया ।=)। लगता है॥

बंगलोर ।

मदरास और सदर्न महट्टा रेलवे का जंकशन है उसका फासला मदरास से २१६ मील और बम्बई से ६६२ माल है यहां की आबहवा बहुत अच्छी है॥

किला, रेज़ीडेनसी, लाल बाग, गिबनपार्क देखने के लायक हैं। किला १५३७ में केम्पे गौड़ा ने बनाया था। १६३८ में बंगलोर को बीजापुर के जनरैल ने फतह किया १७५८ में हैदरअली को दियागया और १७९१ में इस को अंग्रेजी फौज ने फतह किया और १७९९ में वदियार वंश की औलाद में से एक आदमी को दिया गया। लालबाग

आम लोगों की सैर का बाग है और बड़ा सुन्दर है। गिबनपार्क में भी शाम को बहुत लोग जाते हैं यहां हफ्ते में कई बार अंग्रेजी बाजा बजा करता है और लानटेनिस (गेंद बल्ला) खेलने की जगह बनी हुई हैं॥

बंगलोर में ८ अच्छे होटल और बोर्डिंग हाऊस और ६ धर्म्मशाला हैं। इन में से एक धर्म्मशाला जिस को थोप्पाह्चट्टी की चोलतरी कहते हैं शहर के स्टेशन से २०० गज के फासले पर है और एक छावनी के स्टेशन से आधे फर्लांगके फासल पर है। बैलगाड़ियां और यक्के दोनों स्टशनों पर हर वक्त मिलते हैं॥

मद्रास से बंगलोर तक तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २॥।≶) और सवारी गाड़ी में २।-) है॥

बन्दूकपुर।

तीर्थ की जगह है। जनवरी और फरवरी के महीनों में बसन्त पंचमी और शिवरात्री के मौकों पर मेले होते हैं जिन में हज़ारों यात्री लोग चढ़ावे चढ़ाने और जगेश्वर महादेवजी की मूर्ति पर गंगाजल डालने आते हैं। यह मन्दिर १७८१ में इलाका दमोह के नाजाजी बलाल के पिता ने बनाया था जिस को सुपने में मालूम हुआ था कि बन्दूकपुर की एक जगह में जगेश्वर महादेवजी की मूर्ति गड़ी हुई है॥

बन्दूकपुर जी० आई० पी० रेलवे की कटनी बीना ब्रांच पर स्टेशन है इसका फासला कलकत्ते से ईस्ट इण्डियन रेलवे में ७३७ मील है तीसरे दरजे का किराया ७≡)। है और बंगाल नागपुर रेलवे में फासला ७०४ मील और तीसरे दरजे का किराया ६।) है॥

बाईकुला बम्बई ।

मालबार कम्बाला ओचकरडी, महालक्ष्मी और मज़ागांओं के मुसाफिरों को यहां उतरना चाहिये । विकटोरिया बाग जो स्टेशन से थोड़ी दूर है देखनेके कायक है उन में एक अजायबघर, चिड़ियाघर, और बादशाह अलबर्ट का बुत हैं अजायब घर के नजदीक पलटन का बाजा अकसर बजा करता है । विकटोरिया टेकनीकल इन्स्टीच्यूट भी स्टेशन के पास है । सवारी मिलती है ॥

बाईकुला जी० आई० पी० रेलवे पर विक्टोरिया टरमिन्स स्टेशन से २ मील है तीसरे दरजे का किराया ।)॥ लगता है ॥

बादामी ।

अहाता बम्बई के ज़िला बीजापुर और बदामी सबडिविज़न में एक नगर है और सदर्न मरहटा रेलवे के बादामी स्टेशन से तीन मील है यह जगह देखने के लायक है । जैनियों के खोहों के मन्दिर बहुत सुन्दर हैं कहते हैं कि अंग्रेज़ी सम्बत ६५० में बनाये गए थे । तीन मन्दिर ब्रह्मनी मन्दिरों के ढंग के हैं उन पर सन् ५७९ ई० है जैनियों की खोहें ३१ फीट लम्बी चौड़ी और १६ फीट गहरी हैं यह खोहें उस ज़माने की हैं जब बुद्ध मत पर हिन्दु मत ने फिर गलबा पाया नर्सिंह अवतार (विष्णु पांच सिरवाले सर्प अनन्ता पर बैठे हुए) और किस्म किस्म की पत्थर की मूर्तियां अबतक बाकी हैं एक मन्दिर के सामने के पीलपाओं पर मनुष्यों स्त्रियों और लोनों की मूर्तियां खोदी हुई हैं बाजे पीलपाये बहुत खूबसूरत हैं । स्टेशन से ६ मील के फासले पर पारसगढ़ गांव में श्रीयनाशंकरी देवी का बड़ा मन्दिर है जहां हरसाल जनवरी के महीने में बड़ा भारी मेला होता है जिस में सैंकड़ों यात्री आते हैं ॥

बादामी बम्बईसे ४२३ मील और तीसरे दरजे का किराया ४।*)॥ है॥

एक स्टेशन के पास और एक बादामी नगर में देशियों के विश्राम के लिये धर्मशाला है पर पारसगढ़ में कोई नहीं ॥

स्टेशन पर बादामी नगर और पारसगढ़ जाने के लिये बैल गाड़ियां मिलती हैं ॥

बाबाबुडन या चन्द्रा द्रोना ।

रियासत मैसूर के ज़िला दादर में घोड़े के सुम की शकल की एक पर्वतों की कतार है हिन्दुस्तान में पहिले काफ़ी यहां बोई गई थी कहते हैं कि क़रीब दो सौ साल गुज़रे कि एक मुसलमान महात्मा मक्के से काफ़ी का पौदा लाया था और उसी महात्मा के नाम पर इस पर्ब्बत का नाम रक्खा गया उसकी (लोथ) पर्ब्बत के पश्चिम की तरफ़ एक खोह में है एक कलन्दर उसकी खबरदारी करता है जो एक मील के फ़ासले पर आतेगन्दी गांव में रहता है . हिन्दू भी इस जगह को बहुत पवित्र मानते हैं क्योंकि वह दत्तात्रय का इस को सिंहासन समझते हैं ॥

इस पर्ब्बत के पंक्ति में एक जगह कलहट्टी है जहां साहब लोग गर्मी में आकर रहते हैं यहां सिंकोना कोनैन बोए जाने का तजरुबा किया गया था पर्ब्बत के पास दो खोदी हुई झील हैं ॥

सदरन मरहट्टा रेलवे के कदूर स्टेशन से २ फ़रलांग पर एक बंगला है और पर्बत पर कई आश्रम देसियों के लिये बने हुए हैं। पर्बत कदूर से ४० मील है और वहां जाने के लिये कदूर में बैल गाड़ियां मिल सक्ती हैं ॥

कदूर पूना से ४६८ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६॥) और सवारी गाड़ी में ५=)। लगता है ॥

बालासोर ।

ज़िले का सदर मुक़ाम और क़सबा और बंगाल नागपुर रेलवे पर एक स्टेशन है बराबालांग दरिया के दाहने किनारे समुद्र से ६ मील के फ़ासले पर वाक़े है जहां चंदीपुर में सरकार ने १८६६ से हथियार बनाने का कारखाना खोला हुआ है ॥

स्टेशन के पास जरहेसवई महादेव जी का मन्दिर है जिस की बाबत कहते हैं कि धरती से आप ही निकला था शिवरात्री की रात को यहां एक मेला होता है जिस में दो तीन हज़ार यात्री जमा हो जाते हैं। स्टेशन से ६ मील के फ़ासले पर गोपीनाथ का मशहूर मन्दिर है वहां तक सड़क बनी हुई है और गाड़ियां मिलती हैं ॥

बालासोर हौड़े से १४४ मील तीसरे दरजे का किराया १॥=) लगता है ॥

बालूगान ।

बंगाल नागपुर रेलवे का एक स्टेशन है जो रामपुर थाना से तीन मील है इस जगह भागवती ठाकुरानी का एक मन्दिर है यह नगर खुरदा के जनूबी हिस्से की बड़ी भारी तिजारत की जगह है ॥

यह स्टेशन हौड़े से २२७ मील है तीसरे दरजे का किराया ४।) है ॥

बलोत्रा ।

राजपूताना की जोधपुर रियासत में लूनी नदी के दाहने किनारे पर एक क़सबा है यह क़सबा जोधपुर से ६२ मील है और उस शाही सड़क पर वाक़े है जो द्वारका से जोधपुर को आती है। यह हिन्दूओं का बड़ा तीर्थ है। मार्च के महीने में यहां से ६ मील

के क़रीब तिलवाड़ा गांव में मालिनाथ का १५ दिन तक मेला लगता है जिस में ३०००० के क़रीब लोग जमा होते हैं ॥

बलोत्रा जोधपुर बीकानेर रेलवे पर स्टेशन है इस का फ़ासला दिल्ली से ४११ मील है और तीसरे दरजे का किराया ४।-) लगता है। स्टेशन पर पहले और दूसरे दरजे के मुसाफ़िरों के वास्ते वेटिंगरूम हैं और नगर में देसी लोगों के लिये एक धर्मशाला है॥

बाराबार पर्वत ।

अहाता बंगाल के ज़िला गया में पर्वत है और पटना गया रेलवे के बेला स्टेशन से ६ और ८ मील के बीच में है। सब से ऊंचा चोटी बाराबार पर सिद्धेश्वरा मन्दिर है जिस में एक लिङ्ग है कहते हैं कि इस लिङ्ग को इस मन्दिर में दिनाजपुर के असुर राजा बाण ने रक्खा था। राजा बाण की कृष्ण के साथ खूनी लड़ाइयां आज तक मशहूर हैं। शिवजी की यादगार में यहां पर अनन्त चतुर्दशी को मेला सितम्बर के महीने में बड़ी धूम से होता है। १० से २० हज़ार तक मनुष्य यात्री इस मेले में आते हैं। देवता की पूजा रात को होती है। उस दिन यहां एक बाज़ार लगाया जाता है जिस में मिठाई और चढ़ावों की वस्तु बिकती हैं। दक्खिन की तरफ़ और पहाड़ी की जड़ के पास अजीब खोहें हैं जिनको सतघर कहते हैं। इन में से तीन खोहों में बड़ा सुन्दर शिल्प की हुई है चौथी खोह अभी तक अधूरी है। बाक़ी तीन खोहें नगरजुनी पहाड़ी में हैं। थोड़ी दूर पर पवित्र पाताल गंगा है और कावांडोल के पास बुद्ध की बड़ी भारी मूर्त्ति है। इन पहाड़ियों में और बहुत सी मूर्त्तियां हैं ॥

बेला स्टेशन पर इस पर्वत को जाने के लिये कोई सवारी

नहीं मिलती यात्रियों को पैदल जाना पड़ता है। बेला में या पहाड़ी पर कोई धर्मशाला नहीं यात्री खोहों में ठहरते हैं॥

बेला कलकत्ते से ३०५ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।~)||| लगता है॥

बारसी रोड।

बारसी छोटी लैन का जी० आई० पी० के साथ जंकशन है। बारसी क़सबा यहां से २२ मील, बम्बई से २५६ मील और पूना से ११५ मील है तीसरे दरजे का किराया इन जगहों से ।~)॥ २॥)॥ और १॥~) है। पन्धरपुर बारसी छोटी लैन पर बार्सी रोड स्टेशन से ३१ मील के फ़ासले पर है और किराया ।≈)||| लगता है। यहां भीमा दरिया के किनारे पर विथोवा का मन्दिर है जहां जूलाई और नवम्बर मे बड़े बड़े मेले लगते हैं॥

बांसदा।

अहाता बम्बई के सूबा गुजरात काठियावाड़ में देसी रियासत है उनाई मुक़ाम पर जो यहां से ७ मील है एक गर्म पानी का चश्मा है यहां माघ महीने में पूरे चांद के मौके पर हर साल स्नान मेला होता है जो ६ दिन तक रहता है। ६ या सात हजार यात्री जमा होते हैं॥

बासोदा।

जी० आई० पी० रेलवे की इंडियन मिडलैंड शाख पर स्टेशन है। यहां से १५ मील पश्चिम की तरफ रियासत टोंक में एक बड़ा

व्योपारी नगर सेरौज है वह जनवरी की १५ से फरवरी की १५ तक भारी मेला होता है स्टेशन पर वेटिंग रूम है ॥

बांसोदा दिल्ली से ३७६ मील और बम्बई से ५७६ मील है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ४॥।ः) और ६।ः) और डाक गाड़ी में ५॥ः) और ६ः) है ॥

बिजनौर ।

सूबा आगरा और अवध में कसबा है और जिला बिजनौर का सदर मुकाम है । गंगाजी के बायें किनारे से तीन मील के फासले पर वाके है शहर बड़ा सुथरा और साफ है और इस के बीच में एक चौड़ी पक्की सड़क बनी है । जिस के दोनों तर्फ उमदा नालियां हैं । यहां की चीनी बहुत मशहूर है और उसका बड़ा व्योपार होता है । जनेऊ, रूई के कपड़े और चाकू वहां बनते हैं ॥

बिजनौर से ६ मील दक्षिण की तर्फ दारानगर में गंगास्नान का मेला नवम्बर के महीने में होता है जो ५ दिन तक रहता है ४०००० के करीब यात्री लोग इस मेले में जमा होते हैं ॥

दारा नगर और बिजनौर में एक सराय और बिजनौर में हस्पताल के सामने डाक बंगला भी है ॥

बिजनौर अवध रुहेलखण्ड रेलवे के नगीना स्टेशन से १६ मील है । नगीने में बिजनौर जाने के लिये मेल कार्ट गाड़ियां और यक्के मिलते हैं । मेल कार्ट का किराया।ः) से ॥) तक और यक्के का ।) से ।ः) तक एक सवारी का होता है बिजनौर में दारा नगर जाने के लिये बैलगाड़ियां मिलती हैं ॥

सहारनपुर जंकशन से नगीना ७३ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥।ः)। लगता है ॥

बिठूर (बरमा वर्त) ।

नानासाहिब के रहने की जगह थी इस लिये काबिल यादगार है । इस कसबे में उस के कई बड़े बड़े महल थे । यहां पर एक खुशनुमा घाट बना हुआ है जिस को ब्रह्मा घाट कहते हैं इस जगह नवम्बर में पूरे चांद के मौके पर स्नान का मेला होता है बेशुमार यात्री जमा होते हैं ॥

बिठूर बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे पर है इस का फासला कानपुर से १६ मील हौड़े से ६५४ मील दिल्ली से हाथरस के रस्ते २७८ मील और बम्बई से कानपुर और इटारसी के रस्ते ८६० मील है, तीसर दरजे का किराया ७)॥॥, ६।-), ३=) और ६॥।=) लगता है। स्टेशन के पास एक बंगला और दो धर्मशालाएं हैं और बहुत से पांडों के घर भी हैं ॥

बीर नगर ।

बंगाल अहाता जिला नादिया रानी घाट सब डिवीजन में क़सबा है मई मे तीन दिन तक हैज़े की देवी उलाई का जो शिव जी की स्त्री का एक नाम है मेला होता है उस में १०००० यात्री आते हैं ॥

बिरनगर नाम सरकार की तरफ लोगों की बहादुरी के सबब मिला था इसका पहिला नाम ऊला है ॥

मुकर जी बाबू ने अतिथिशाला खोली है जिस में मुसाफिरों को मकान और खाना बिना दाम मिलता है । बैहलियां पालकियां और गाड़ियां किराये पर मिल सक्ती हैं ॥

बीर नगर ई० बी० एस० रेलवे पर कलकत्ते से ७३॥ मील है तीसरे दरजे का किराया १=)॥ लगता है ॥

विरुर ।

सदर्न मरहट्टा रेलवे पर बाबा बुधन पहाड़ के लिये स्टेशन और शिमोगा शाख का जंकशन पूना से ४६४ मील के फासले पर है मुसाफिर गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ६।≈)। है ॥

बाबा बुधन पहाड़ घोड़े के नाल की शकल का है । बाबा बुधन ने जिस के नाम पर इस पहाड़ का नाम है पहले मैसूर में काफी बोई थी । उसका मज़ार पहाड़ की एक खोह में है जो जनूबी हिन्दुस्तान का मक्का खियाल किया जाता है हिन्दू लोग भी इस जगह को वैसाही पवित्र मानते हैं जैसा मुसलमान । वह इस को दृत्तातिरया की गद्दी कहते हैं और कहते हैं वह इस जगह पिछले ज़माने में गायब हुआ था फिर आये गा और यह विष्णु का आखीरी अवतार और सतयुग के शुरू होने का निशान होगा ॥

विरुर में नारियल और सुपारी की बड़ी मण्डी है ॥

स्टेशन के पास बंगला और नगर में जो स्टेशन से ३ मील है, दो धर्मशालायें हैं ॥

बिलासपुर जंकशन ।

बंगाल नागपुर रेलवे पर कलकत्ते से ४४५ मील है, करीब १५ मील उत्तर की तरफ रतनपुर है, जो पुराने ज़माने में बंश राजपूतों का जो अंग्रेजी सम्बत् से ५०० साल पहले हुए हैं राजधानी था यह जगह ज़िले में सब से जियादा पवित्र समझी जाती है । शहर अब उजाड़ हालत में है पर पुराने किले को देखकर इस जगह की पहिली शान शौकत मालूम होती है । शहर की तरफ अनगिनत सत्तियों की पक्की समाधें हैं जिन में से सब से बढ़कर एक मीनार राजा लक्ष्मण की २० राणियों की यादगार में है जो अपने पती के साथ सती होगई थीं । यहां मन्दिर भी बहुत हैं

जो सब बड़े पुराने, और पवित्र समझे जाते हैं रतनेश्वर का मन्दिर जिस सबब से शहर का नाम रतनपुर है बहुत बड़ा है। पहाड़ियों के बीच में एक पवित्र झील है जिस में चन्द्रमा पूरा होनेपर सब जाकर नहाते हैं॥

बिलासपुर में स्टेशन से २ मील एक सराय और एक धर्म्मशाला है और ३ मील बंगला है। रतनपुर में भी बंगला है सराय या धर्मशाला कोई नहीं॥

बिलासपुर रतनपुर को पक्की सड़क है और तांगे जाते हैं॥
कलकत्ते से बिलासपुर का तीसरे दरजे का किराया ४॥।~)॥ लगता है॥

चित्रागंटा।

मद्रास अहाते के ज़िला नेलोर और कवाला तालुक में समुन्द्र से ८ मील गांव है। यहां एक पहाड़ी पर विष्णु का मन्दिर है जिस का हरसाल मेला होता है, जिन लोगों की कहीं प्रीति हो और खर्च के सबब विवाह न कर सकते हों वह यहां आकर विवाह करते हैं॥

हर साल फर्वरी के महीने के आखीर में श्री वेनकाटाचलापती या वेनकाटेश्वरलू का ब्रह्म ऊतशावम होता है। पहाड़ी के पास तीन चत्तरम हैं पर वहां खाना ही मिलता है और लोग एक टोप के नीचे ठहरते हैं। बैल गाड़ियां स्टेशन पर मिलती हैं, आने जाने का किराया ॥।) लगता है॥

चित्रागंटा मद्रास रेलवे पर मद्रास से १३१ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥≈) लगता है॥

बेजवादा ।

मद्रास रेलवे का शाख़ नार्थ इस्ट का जंकशन है और किस्टना के उत्तर के किनारे पर वाक़े हैं यह शहर नहरों के रास्ते से मद्रास एलोर, मसलोपटम, कोकानेडा और राज मन्द्री से मिला हुआ है इसी लिये बड़ी ज़रूरी जगह है यहां पर पुरानी इमारतें भी हैं जिन में पहाड़ में खोदे हुए मन्दिर बुद्ध लोगों के ज़माने के मौजूद हैं और हिन्दुओं के बड़े पुराने मन्दिर याने पगोड़े भी हैं। नहरों के खोदने के वक़्त बड़ी २ अजीब पुरानी चीज़े निकली थीं। १८०२ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का बनाया हुआ किला गिरा दिया गया था॥

स्टेशन पर रिफरेशमैन्ट रूम और पास एक बंगला है और तीन चत्तरम और चोलतरियां भी हैं। एक चत्तरम स्टेशन से क़रीब ४० गज़ के फासले पर है। बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं॥

बेज़वादा मद्रास से २६८ मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥) लगता है॥

बेगमाबाद ।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला मेरठ में नार्थ वेस्टर्न रेलवे पर नगर है। इसका फासला दिल्ली से २६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ।-)॥ लगता है॥

इस नगर में रानी बाला बाई का बनाया हुआ बड़ा सुन्दर मन्दिर है और मार्च के महीने में सिकरी देवी का मेला एक और मन्दिर पर लगता है जो ४ दिन तक रहता है। ४ हज़ार के क़रीब लोग इस मेले में आते हैं। नगर में नवाब ज़फर अली की जिस ने इस नगर को बसाया था बनाई हुई एक टूटी हुई मसजिद है। यहां

स्कूल, डाकखाना और तार घर भी हैं स्टेशन के पास एक बंगला और एक कच्ची सराए है ॥

बेट्टिया ।

तिरहुत स्टेट रेलवे पर अहाता बंगाल के ज़िला चम्पारन में सब से बड़ा और तिज़ारती कसबा है। महाराज का महल जो कसबे के दक्खिन की तरफ है बहुत खूबसूरत है। महल के पास ही रोमन कैथलिक ईसाइयों का गिरजा और मिशन है इस मिशन को १७४६ में एक इटली मुलक के पादरी ने क़ायम किया था यहां के बहुत से ईसाई ब्राह्मणों की औलाद में से हैं ॥

अक्तूबर के महीने में वहां एक बड़ा मेला राजा रामचन्द्र जी की यादगार में होता है जिस में २०००० से २५००० तक लोग जमा हो जाते हैं ॥

बेट्टिया बंगाल ऐण्ड नार्थ वेस्टरन रेलवे पर कलकत्ते से ४५१ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥~) लगता है ॥

बेरी ।

पंजाब के ज़िला रोहतक की तहसील रोहतक में कसबा और म्यूनीसीपैलटी है और देहली से भिवानी को जो सड़क जाता है उस पर वाक़े है। एक डोगरे ने अंग्रेज़ी सम्बत् ६३० में बसाया था। यहां बहुत से मालदार शाहूकार रहते हैं और इर्द गिर्द के इलाके में बड़ा ब्योपार होता है फरवरी और अक्तूबर में देवी के दो बड़े मेले होते हैं दूसरे मेले में टट्टुओं की नुकायश होती है ॥

रोहतक लाहौर से २५४ मील और तीसरे दरजे का किराया २॥।~)॥। लगता है। रोहतक में बेरी जाने के लिये सवारी मिलती है ॥

बेलागाम ।

बम्बई अहाते के जनूबी डिवीज़न का ज़िला है। इस के पास पार सगड़ सब डवीज़न में यल्मा देवी की पहाड़ी है जो इस ज़िले में सब से बड़ी तीर्थ की जगह है अपरैल और नवम्बर के महीनों में पूरे चन्द्रमा के दिनों में दो मेले होते हैं जिन में १५००० से ४०००० तक यात्री जमा होते हैं। नवम्बर का मेला देवी के पति का मरना ज़ाहर करता है। यह मेला बड़े मन्दिर से चौथाई मील के फासले पर होता है और एक वक्त मुकर्रर पर सब लोग रोने का गुल मचाते हैं और औरतें अपने हाथों की चूड़ियां तोड़ डालती हैं। अपरैल का मेला देवी के पती के फिर जी उठने की यादगार में होता है॥

बेलगाम सदर्न मर्हट्टा रेलवे का स्टेशन है इस का फासला पूना से २४५ मील और तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में २॥)॥ और डाक गाड़ी में ३🙋 लगता है॥

बेलूर ।

मैसूर रियासत के ज़िला हसन में यगात्री दरिया के दाहने किनारे और हसनसे सड़क के रस्ते २३ मील एक गांव है। हसन बड़ा पुराना शहर है पुराणों में उस को बेलापुरा लिखा है और उस इलाके में उस को दक्षिण वरनासीया दक्खिनी बनारस कहते हैं। इस जगह की शोहरत चन्ना केसवा के मन्दिर के सबब से है जिस में कारीगर जकनाचारजया के हाथ के खूबसूरत बेलबूटे और संगतराशी की हुई है। इस मन्दिर को अंगरेजी बारहवीं सदी के बीच में कोएसाला बलाला खानदान के एक राजा ने जब वोह जैन मत से विष्णु मत में आया बनवाया था। यहां हरसाल अपरैल के महीने में मेला होता

है जिस में ५००० के करीब लोग आते हैं। यह गांव बेलूर तालूक का सदर भी है॥

बेलूर के लिये सदरन मरहट्टा रेलवे का बनावार स्टेशन पास है उसका फासला यहां से २८ मील है। यह स्टेशन पूना से ५१२ मील है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ५।~)॥ है॥

बेलूर में बंगला और एक धर्मशाला भी है। बनारस के स्टेशन मास्टर की मारफत बैल गाड़ियां बेलूर जाने के लिये मिल सक्ती हैं एक गाड़ी का किराया ३) लगता है॥

बैराम घाट।

एक बड़ी पवित्र जगह इलाका करंजा ज़िला एलचपुर मुलक बरार में है यह स्थान एलचपुर से १४ मील के फासले पर है। अक्तूबर के महीने में यहां एक मेला होता है जिस में ५०००० के करीब लोग जमा होते हैं इस मौके पर एक टीले के साम्हने हजारों पशु भेंट दिये जाते हैं हिन्दू टीले के एक तरफ होते हैं और मुसलमान दूसरी तरफ होते हैं। एक अजीब और मोतबर बात यह है कि यहां हज़ारों पशु बलिदान किये जाते हैं पर कभी एक भी मक्खी नज़र नहीं आती॥

करंजा जी० आई० पी० रेलवे के मुर्तज़ापुर स्टेशन से २१ मील और अमरावती से ३३ मील है। इन दोनों स्टेशनों पर करंजा जाने के लिये तांगे और बैल गाड़ियां मिलती हैं॥

अमरावती बम्बई से बदनेरा जंकशन के रस्ते ४१६ मील और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६॥)। और सवारी गाड़ी में ४।~)। है और मुर्तज़ापुर ३८६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६~) और सवारी गाड़ी में ४) है॥

बैकुण्ठपुर ।

बंगाल अहाते के ज़िला पटना में गंगाजी के किनारे पर कसबा और बड़ा तीर्थ है शिवरात्री के तेहवार पर हजारों यात्री यहां आते हैं। पहले यह कसबा बड़ा था ॥

ईस्ट इण्डिया रेलवे का पुनपुन स्टेशन इस जगह से पास है। इस स्टेशन का हौड़े से फासला ३४१ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३॥=)। है ॥

बोधन ।

अहाता बम्बई के ज़िला सूरत और मंदवी सब डिवीज़न में गांव और तीर्थ है। हर बारहवें साल जब बृहस्पति सिंह के नक्षत्र में पहुंचता है तो यहां पर मेला होता है जिस में २००० के करीब लोग सूरत, बड़ोच और अहमदाबाद के जिलों और बड़ोदा और राजपीपला रियासतों से आते हैं। मन्दिर में गौतमेश्वर महादेव जी की मूर्ती रक्खी है उन्हीं की यादगार में मेला होता है। मन्दिर के साथ मुआफ़ी पर ज़मीन है॥

बी० बी० ऐंड० सी० आई रेलवे का किम स्टेशन बोधन से १२ मील है और किम बम्बई से १८२ मील है बम्बई से इस स्टेशन तक तीसरे दरजे का किराया २।=) लगता है। किम से बोधन जाने के लिये बैलगाड़ियां मिलती हैं किराया एक गाड़ी का १॥) लगता है। बोधन में एक ही धर्मशाला है और यात्री अपने प्रोहतों के घरों में

बोरयावी ।

वर्तल से डेढ़ मील है यहां एक स्थल और एक कृष्ण जी का मन्दिर है। इस नगर को १८१० में एक ब्राह्मण सहजानन्द स्वामी तपस्वी ने बसाया था, यह महात्मा बुरे कामों से लोगों और खासकर प्रोहतों को रोकतें थे और इसी सबब से लोग उस पर बड़ी सख़्ती करते थे पर अपने चेलों में जोश फैलाने से वोह जबरदस्त होगया ॥

यहां हर साल दो बड़े मेले होते हैं एक चैत्र महीने की सुदी १५ (अपरैल) को स्थल कायम करने वाले की यादगार में होता है और दूसरा कार्तिक सुदी १५ (नवम्बर) को उस के बाप की यादगार में ॥

बोरयावे बी० बी० ऐंड० सी० आई रेलवे पर बम्बई से २७५ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।≈) लगता है ॥

वर्तल में दो धर्मशालायें हैं पर बोरयावी में कोई नहीं यहां बैल गाड़ियां ≈) मील किराये पर मिलती हैं ॥

बोरिवली ।

या दाईश्वर बी० बी० और सी० आई० रेलवे पर मांटपेजिर और एक जेसूट (ईसाइयों का एक मत) खानगाह के पास वाके है इस खानगाह पर रोमन कैथलिक ईसाई मुकरिर दिनों में बड़ी कसरत से जाते हैं। कनेरी की मशहूर खोहें जिनको कहते हैं कि बुध लोगों ने बनाया था इस स्टेशन से ४ मील हैं यह खोहों के मन्दिर १०० से ऊपर हैं पहाड़ की चट्टानों को काट कर ६ या १० सदी में बनाए गए थे बड़ा मन्दिर ८८॥ फीट लम्बा और ३८॥ फीट चौड़ा है और गुम्मजदार छत ४० फीट ऊंची अठ पहलू पील पायों पर खड़ी है दर्बा रखोह ६२॥ फीट लम्बा और ४२॥ फीट चौड़ा है लेकिन सिर्फ ६ फीट ऊंचा

है। रंग और पलस्तर के निशान अब तक हर खोह में मौजूद हैं। पहाड़ी के बड़े हिस्सों पर पक्के चबूतरों और बागों के निशान भी बाक़ी हैं और कई पत्थर की नालियां हैं जिन में से पानी निकल कर पहाड़ी में गाइब हो जाता है। पहाड़ी की चोटी पर से बम्बई शहर और बन्दर, बसीन और समुद्र दिखाई देते हैं॥

स्टेशन पर मुसाफिरखाना और उसके पास एक धर्मशाला है। यहां कनेरी की खोहें देखने के लिये बैलगाड़ियां मिलती हैं आने जाने का किराय २) लगता है॥

बोरवली बम्बई से २४॥ मील है तीसरे दरजे का किराया ।)॥। लगता है॥

बौसी।

अहाता बङ्गाल के ज़िला भागलपुर में मन्दिर है पहाड़ी के नीचे एक गांव है। बेशुमार मकान, तालाब, बड़े २ कुएं और पत्थर की मूर्त्तियां एक दो मील तक इस पवित्र पहाड़ी के इर्द गिर्द मिलती हैं उन से मालूम होता है कि किसी जमाने में यहां कोई बड़ा शहर बसता था, आस पास के लोग कहते हैं कि उस शहर के ५२ बाज़ार ५३ सराय आम और ८८ तालाब थे। और दिवाली तेहवार की रात को एक बड़े मकान में जिस के खण्डर अब तक बाकी हैं एक लाख दिये जलाये जाते थे हर घर को सिर्फ एक दिया जलाने की इजाज़त होती थी। इस मकान के विजयद्वार पर संस्कृत में कविता है जिस से मालूम होता है कि ३०० वर्ष भी नहीं हुए जब वह शहर आबाद था जब मन्दिर पहाड़ी पर मधुसूदन मन्दिर टूट गया तो देवता की मूर्त्ति बौसी में ले आये थे जहां यह अब तक मौजूद है पौष संक्रांती के दिन हर साल इस मूर्त्ति को बौसी से पहाड़ी के नीचे जाते हैं और विजयद्वार पर जिसका ऊपर ज़िकर हो चुका है झूला

मुलाते हैं। इस तेहवार पर ३०००० से ४०००० हज़ार तक यात्री देश के सब हिस्सों से पवित्र तालाब में स्नान करने आते हैं और एक मेला होता है जो १५ दिन रहता है॥

बौसी इस्टरन बङ्गाल रेलवे की माइमन सिंह जगन्नाथ जी शाख स्टेशन है इस का फासला कलकत्ते से ३६३ मील और तीसरे दरजे का किराया ४॥=) है॥

भुवनेश्वर।

बङ्गाल नागपुर रेलवे पर बड़ा तीर्थ है ६०० साल तक याने ५०० से ११३० तक यह उडीसा के शिव जी के आधीन केशर बंशी राजों की राजधानी रहा। किसी ज़माने में ७००० मन्दिर बिन्दू सरोवर की पवित्र झील के गिर्द थे पर अब उन में से ५०० के क़रीब २ रह गये हैं और इन में से क़रीबन सब के सब खाली और टूटी फुटी हालत में हैं। इन से उडीसा की तरह तरह की कारीगरी सातवीं सदी से बारवीं सदी तक जाहर होती है मुक्तेश्वर का खूबसूरत मन्दिर सातवीं सदी में बना था आम लोग इस को लिंगराज महादेव कहते हैं इस के इर्द गिर्द अनगिनत मन्दिर हैं॥

यहां से कोई तीन मील खोडगिरी और उदयगिरी पहाड़ियों पर खोहों में बने हुये बुद्ध लोगों के मन्दिर हैं जो अंग्रेज़ी सम्बत से ३ या ४ सौ साल पहिले के हैं। जगन्नाथ से लौटते हुए यात्री लोग भुवनेश्वर के दर्शन करते हैं। यहां कई धर्मशाला हैं॥

भुवनेश्वर कलकत्ते से २७१ मील है डाक गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ४।) और सवारी गाड़ी में ३॥-) लगता है॥

भरतपुर ।

राजपूताना में भरतपुर रियासत का बड़ा शहर और किला है और राजपूताना मालवा रेलवे पर आगरे से ३५ मील और जयपुर से ११२ मील है ॥

इस शहर का नाम भरतराजा के नाम पर रक्खा गया है कहते हैं कि यह शहर कृष्ण जी की हिफ़ाज़त में है जिन की पूजा यहां बिहारी के नाम से की जाती है। किला तारीख़ में मशहूर है १८०५ और १८२७ में लार्डलेक और लार्ड कोम्बर मोयर ने इसे घेरा था। हर साल यहां बड़ा भारी मेला होता है ॥

भरतपुर में चौरियां अच्छी बनती हैं ॥

भरतपुर कलकत्ते से ८७७ और बम्बई से ८१५ मील है। कलकत्ते से आगरे के रस्ते तीसरे दरजे का किराया ८) और बम्बई से ८॥) लगता है ॥

भद्राचलम ।

अहाता मदरास के ज़िला गोदावरी में राजमन्दरी से करीब १०४ मील पर भद्राचलम तालुक का बड़ा कसबा है। इस का नाम भद्राचलम इसवास्ते है कि यह उस पहाड़ी के पास वाके है जिस पर भद्रादृऋषि तपस्या करते थे इस जगह राजा रामचन्द्र जी का मशहूर मन्दिर है। कहते हैं कि लंका को जातेहुए वह गोदावरी दरिया से यहीं पार उतरे थे उनकी यादगार में यहां हर साल एक मेला लगता है। मन्दिर को ऋषि प्रातिस्था ने ४०० साल गुजरे बनाया था लेकिन कभी कभी उस में ज़ियादती होती रहती है। बड़े मन्दिर के दोनों तरफ २४ छोटे २ मन्दिर हैं। इस मन्दिर में जो जवाहरात

हैं बड़े कीमती हैं। निज़ाम की तरफ़ से भी रुपया मिलता है। भद्राचलम से २० मील एक और बड़ा पुराना मन्दिर है जिस को परनैसलर कहते हैं। यहां अपरैल के महीने में मेला होता है जिस में २०००० के करीब लोग आते हैं। इन में से जियादा समुद्र के किनारे के रहने वाले होते हैं। इस मेले में व्यौपार भी बहुत होता है॥

भद्राचलम में एक बंगला और २ धर्मशालायें हैं। इस नगर से निज़ाम रेलवे का यलन्दू स्टेशन ५६ मील है वहां बैलगाड़ियां ५) से ८) तक किराये पर मिल सक्ती हैं। यलन्दू बेज़वादा से ६३ मील है और तीसरे दरजे का किराया १) लगता है॥

भागलपुर।

ईस्ट इण्डियन रेलवे पर साहिबगंज से ४६ मील है और समुद्र से १५७ फीट ऊंचे पर है। यह बड़ा सिवल स्टेशन और तिजारती कसबा है और गंगा जी के दाहिने किनारे पर वाके है॥

स्टेशन पर वेटिंगरूम है और पास ही डाक बंगला, एक बड़ी सराय और हिन्दू धर्मशाला हैं॥

कमिश्नर साहब भागलपुर में रहते हैं। यहां एक बड़ा देशी कालिज, हस्पताल और सैंटरल जेल है जेल के बने हुए परदे गलीचे और कम्बल मशहूर हैं॥

स्टेशन से ३ मील के करीब एक जैनियों का मन्दिर है जहां यात्री लोग कसरत से आते रहते हैं मन्दिर के पास एक बड़ी सराय है चम्पानगर जो बुद्ध लोगों की राजधानी था भागलपुर से ४ मील पश्चिम की तरफ है। सुलतानगंज भागलपुर से १५ मील के फ़ासले पर है गोपीनाथ के मन्दिर के सबब मशहूर है। वह मन्दिर गंगा जी

के बीच में एक चट्टान पर बना हुआ है इस को देखने आने वालों को किश्ती हर वक़्त मिल सकती है॥

भागलपुर ईस्ट इण्डियन रेलवे पर वाक़े है इस का फ़ासला कलकत्ते से २६५ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३)। लगता है॥

भागीरथी

बंगाल में दरिया और गंगाजी की शाख है। हिन्दू इस को बड़ा पवित्र मानते हैं। इस पवित्र दरिया के असले की बाबत कहते हैं कि राजा सगर जो राजारामचन्द्र जी का तेरहवां पित्तर था अश्वमेध यज्ञ ९९ दफ़ा कर चुका था यह इस तरह होता था कि एक घोड़ा छोड़ देते थे अगर वह सारे हिन्दुस्तान में फिरकर बिना रोक टोक वापिस आगया तो समझा जाता था कि छोड़ने वाले की सर्दारी मानी गई और तब घोड़े को देवताओं के बलदान किया जाता था। राजा सगर ९९ दफ़ा यह रसम पूरी कर चुका था और सौवीं दफ़ा की तैय्यारी कर रहा था पर इन्द्र देवता ने आप यज्ञ किया था और उस को जलन आई कि राजा सगर उस से बढ़ जाएगा सो उस ने राजा सगर का घोड़ा धरती के अंदर एक कोठरी में जहां एक धर्मात्मा तपस्या कर रहे थे छुपा दिया राजा सगर के ६०००० बेटे घोड़े को ढूंडते ढूंडते उस जगह जा पहुंचे जहां घोड़ा छुपा था और यह ख़याल कर के कि घोड़ा उस धर्मात्मा ने छुपाया है उस पर हमला किया उस ने उन लड़कों को सराप देकर भस्म कर दिया और वह नरक में गए राजा सगर का एक पोता था वह अपने बाप और चाचों को ढूंडने निकला और फिरते फिरते उस धर्मात्मा के पास पहुंचा और मिन्नत खुशामद की उस महात्मा ने जवाब दिया कि अगर गंगा जी आकर उन के अस्थि को छुए तो उनका छुटकारा हो सक्ता है।

गंगाजी उस वक्त स्वर्ग में ब्रह्म की निगहबानी में थी और सगर के पोते ने उस से अर्ज़की कि गगां जी को पृथ्वी पर भेज दें पर वह अरदास क़बूल होने से पहिले मर गया इस के कोई लड़का नहीं था लेकिन ईश्वर की मरजी से उस की विधवा के लड़का हुआ जिस का नाम भागीरथरखा उस की तपस्या से गंगा जी को पृथ्वी पर आने की इजाज़त हो गई। भागीरथ ने गंगा जी को समुद्र के पास तक रस्ता दिखा दिया और कहने लगा कि बाक़ी रस्ता वह नहीं दिखा सक्ता गंगा जी ने वहां पहुंचने के लिये अपने आप को सौ धारों में बांट दिया जिन मे से एक कोठरी में राजा के लड़कों की राख तक पहुंच गई और उन का छुटकारा हो गया॥

भाद्र्क।

सूबाजात मुतवस्सत के ज़िला चंदा से चंदा शहर से १८ मील के फ़ासले पर उत्तर पश्चिम की तरफ़ एक क़सबा है। कहते हैं कि यहां बड़ा शहर भद्रावती जिसका महाभारत में ज़िकर है और जहां श्यामकर्ण घोडे के लिये लड़ाई हुई आबाद था भामा घोड़े को धर्म्मा राजा के पास बलिदान करने के लिये उठाकर ले गया देवाला पहाड़ी पर उस के पांव के निशान अब तक दिखाये जाते हैं। भाद्रक में और देवाला और विंभासनी पहाड़ियों में खोह के मन्दिर और उन पहाड़ियों पर निशान, भद्रावती का मन्दिर और बेशुमार मन्दिरों, महलों और तालावों के खंडर हैं जिन से मालूम होता है कि किसी ज़माने में यहां एक बड़ा शहर आबाद था॥

भाद्भूत।

बम्बई अहाते के ज़िला बड़ोच में बड़ोच शहर से ८ मील के

फासले पर और नर्बदा दरिया के किनारे पर गांव और तीर्थ है। अगस्त सितम्बर के महीनों में हर उन्नीसवें या बीसवें साल महादेव जी का मेला होता है जो पूरा महीना रहता है। इस में ६०,०००. के करीब यात्री जमा होते हैं। यहां एक छोटा सा मन्दिर भी है॥

बड़ोच बम्बई से बी० बी० एण्ड सी० आई रेलवे में २०४ मील है तीसरे दरजे का किराया २।=) लगता है। भड़ोच में भादभूत जाने के लिये सवारी मिलती है॥

भादरसा।

अवध के ज़िला फैज़ाबाद में फैज़ाबाद शहर से दस मील सुलतानपुर की सड़क पर कसबा है कहते हैं कि राजा रामचन्द्र जी बनबास से वापिस आकर अपने भाई भरत से इस जगह मिले थे और इसी वास्ते इसका नाम भद्रारसा याने भाइयों का मिलाप से भादरसा बन गया। हर साल भरतकुण्ड पर मेला होता है जिस में ५००० हज़ार लोग आते हैं॥

लखनऊ से फैजाबाद अवध रुहेलखण्ड की लूपलाइन के रस्ते ८० मील है तीसरे दरजे का किराया १)॥ है फैज़ाबाद में भादरसा जाने के लिये सवारी मिलती है॥

भन्दूप।

जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन है। तुलसा और विहार झीलें जिन से बम्बई में पानी आता है स्टेशन से चार मील हैं। भन्दूप के रास्ते से झीलों को जाने वाले मुसाफिरों को घोड़े या गाड़ी का इन्तिज़ाम पहले से करना चाहिये कनेरी की खोहों

से यह स्टेशन बहुत पास है लेकिन थाना स्टेशन से जो सड़क आती है अच्छी हैं॥

भन्दूप बम्बई से १७ मील है तीसरे दरजे का किराया।) लगता है॥

भीमघोड़ा।

सूबाजात आगरा और अवध के जिला सहारनपुर में एक जगह और हिन्दुओं का तीर्थ है पहाड़ की एक छोटी सी खोह में जो देरादून की दक्खिनी हद पर वाके है और एक सीधी ३५० फीट ऊंची चट्टान पर एक कुण्ड है जिस में पानी गंगा जी की एक छोटी शाख से आता है इस कुण्ड के ऊपर चट्टान में ५ फीट चौकोनी एक जगह खोदी हुई है जिस में साधु रहता है। कहते हैं कि भीम को इस जगह मुकर्रर किया गया था कि गंगा जी किसी और रस्ते न चली जाए और भीम के घोड़े ने लात मारी थी तो वह खोह जिस का ऊपर जिकर हुआ बनी थी। कुण्ड के पानी में यात्री लोग पाप दूर करने के लिये स्नान करते हैं अब चट्टान में एक छोटा सा मन्दिर भी बनाया गया हैं यहां से सीढ़ियां कुण्ड तक जाती हैं॥

भीरी।

सैण्ट्रल प्राविनसिज़ के ज़िला वारधा में शहर वारधा से २० मील पर गांव है जो जन्मअष्टमी के मेले के वास्ते मशहूर है। मेला ८ दिन तक रहता और इस मौके पर कृष्णजी का जन्म दिन मनाया जाता है॥

मेले में २ हजार के करीब यात्री आतेहैं॥

भोरी जाने के लिये जी० आई० पी० रेलवे का बारथा स्टेशन पास है ! इसका फासला बम्बई से ४७२ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ७।ﾉ) और सवारी गाड़ी में ४॥ﾉ) लगता है । भोरी में सराय या धर्मशाला कोई नहीं ॥

भीलसा ।

यह जगह बुद्ध लोगों के अजीब टोपों के लिये मशहूर है फर्गूशन साहब लिखते हैं कि हिन्दुस्तान में यह टोपों का झुण्ड सब से बड़ा और सब से जियादा अजीब है । इन्होंने सांची के बड़े टोप और वहां की औयाना नागपूजा का बहुत कुछ हाल लिखा है ॥

भीलसा के टोप गिनती में करीब ६५ हैं और १७ मील लम्बाई में और ६ मील चौड़ाई में फैले हुए हैं । सांची में १० टोप हैं, सोनारी में जो भीलसा से ८ मील है ८, सधारा में जो भीलसा से ८ मील पश्चिम की हैं ६। अन्धेर में जो भीलसा से दक्खिनी पूर्वी कोने में १३ मील के फासले पर है ३। और भोजपुर में जो भीलसा से ८ मील है ३५ टोप हैं कहते हैं कि इन में से बहुत से असोका के जमाने के हैं । पर सांची का बड़ा टोप उस से भी ३०० साल पहले का है ॥

भीलसा स्टेशन पर वेटिंग रूम है ॥

यह स्टेशन जी० आई० पी० रेलवे पर बम्बई से ५५५ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ८॥ﾉ) और सवारी गाड़ी में ६ﾉ) लगता है ॥

भीमावर्म ।

अहाता मद्रास के ज़िला नेल्लोर में गांव है जो सिंगारा आया

कोदा मन्दिर के खर्च पूरा करने के लिये दिया गया था। कहते हैं कि पुराना वैष्णव का मन्दिर जो पासही एक पहाड़ी पर है अगस्त या मलाई मुनी ने बनवाया था उसी पहाड़ी पर एक खोह में मन्दिर है जिसका दरवाजा पत्थर की एक बड़ी मूर्ति से बन्द होगया है पर मन्दिर के सरप्रस्त उस मूर्ति को उठाने नहीं देते। विष्णु जी की यादगार में जिनको यहां नरसिंह स्वामी कहते हैं, हर साल अप्रैल में मेला होता है॥

भेतरा गांव ।

सूबा अवध ज़िला रायबरेली की तहसील दलमौ में रायबरेली शहर से १२ मील एक कसबा है। इस जगह हर साल यहां की सरप्रस्त आनन्दा देवी का मेला होता है जिस में ४००० लोग आते हैं॥

रायबरेली अवध रुहेलखण्ड रेलवे पर मुगलसराय से १४६ मील और सहारनपुर से ३७० मील है तीसरे दरजे का किराया १॥।) और ३।≈)॥। लगता है। रायबरेली में भतरा गाओं जाने के लिये सवारी मिलती है॥

भेराघाट ।

सेंट्रल प्राविन्सिज़ के जिला जब्बलपुर में नरबदा दरिया के किनारे पर एक गांव है इस के इर्द गिर्द का नजारा बड़ा अजीब है खासकर चांदनी रात में निहायत खूबसूरत मालूम होता है। दरया का साफ पानी यहां १२० फीट ऊंची सीधी पहाड़ियों के बीच में से बल खाता हुआ गुजरता है। पहाड़ियां सुफैद रंग की हैं इसी सबब से संगमरमर की पहाड़ीयां मशहूर हैं। यह ऊपर से मिलीहुई मालूम होती हैं बल्कि एक जगह पर इतनी पास पास हैं कि लोगों

ने उस जगह का नाम बन्दर की छुलांग रक्खा है बहुत से मुसाफिर इस जगह को देखने आते हैं ॥

कहते हैं कि यह रास्ता दरिया के वास्ते इन्दर देवता ने बनाया था उस के हाथी के पैर के निशान की अब तक पूजा की जाती है पास ही एक गांव दुम पहाड़ा पर मन्दिर है जहां से नज़ारा बड़ा सोहावना मालूम होता है। मन्दिर के तीन तरफ जंगल है और चौथी तरफ उसमें जाने की पक्की सीढ़ियां बनी हुई हैं। मन्दिर के इर्द गिर्द कुटियां हैं जिन पर शिवजी और दूसरे देवताओं की मूर्त्तियां हैं। नवम्बर में यहां हर साल मेला भी होता है ॥

भेराघाट और संगमरमर की चट्टानें जा० आई० पी० रेलवे के स्टेशन मीरगंज से ३ मील है ॥

मीरगंज बम्बई जबलपुर लाइन पर बम्बई से ६०६ मील है तीसरे दर्जे का किराया डाक गाड़ी में ६॥) और सवारी गाड़ी में ६।-) लगता है ॥

भैरोंघाटी।

सूबा आगरा और अवध की रियासत गढ़वाल में एक पहाड़ी दर्रा और मन्दिर है यहां भागीरथी और जहनवी नदियां एक गहरी और तंग घाटी में मिलती हैं जिस के गिरद लाल पत्थर की सीधी पहाड़ियां हैं। यह जगह बड़ी पवित्र समझी जाती है और हिन्दू लोग हिन्दुस्तान के सब हिस्सों से यात्रा के लिये आते हैं ॥

हरिद्वार से भैरोंघाटी को रस्ता जाता है ॥

मदूरा।

अहाता मदरास में मदूरा ज़िले का सदर मुक़ाम और साऊथ

इरिडयन रेलवे का स्टेशन वैगई नदी के किनारे मद्रास बीच जंकशन स्टेशन से रेल में ३४७ मील और तीसरे दरजे का किराया ३॥-) लगता है यह हिन्दुस्तान देश में बाड़ पुराना और नामी नगर है। पहले यह नगर विद्या और कालिज के सबब बहुत मशहूर था कहते हैं शिवजी ने परिडतों को हिरेती तिपाई दी जिस पर भले आदमी बैठना चाहते तो बड़ी होजाती थी और खोटे लोगों को धक्का दे देती थी मुहल्ले के तो प्रोहत तिरुवल्लूर ने जो बड़ा कवि हुआ है इस तिपाई पर जगह मांगी पर ब्राह्मण पारडेतो ने नहीं दी परन्तु जब कवि के बनाए श्लोकों की पुस्तक तिपाई पर रक्खी गई तो वह तिपाई इतनी बढ़गई कि जो उस पर बैठे थे सब गिर गये और परिडत ऐसे लजाए कि पास एक तलाब में डूब गए और कालिज टूट गया॥

मदूरे के सुन्दर और नामी मन्दिर देखने के लायक़ हैं। इनमें से सुन्देश्वाड़ा का बड़ा मन्दिर २८२ गज़ लम्बा और २४८ गज़ चौड़ा है उसके ६ गपूरे हैं जिन में से एक १५२ फीट ऊंचा है। हज़ार पीलपायों वाला दालान ५५५० में आर्य्या नायक ने बनवाया था तालाब बड़ा सुन्दर है और उसके गिर्द छत्ते बने हैं मन्दिर के अन्दर बहुत संगतराशी की हुई है जो हिन्दुस्तान देश में सब से अच्छी है॥

तिरुमला की चोलत्री में १२० पीलपाए हैं सब पर बड़ी मेहनत से बेल बूटे और मूर्तियां खोदी हुई हैं। अगली और योद्धों घोड़ों, सिंहों की मूर्तियां बनी हैं शिवजी ने राजा तिरुमला को वचन दिया था कि वह हर साल उसके पास १० दिन आकर रहा करेंगे और राजा ने यह चोलत्री उनके वास्ते बनवाई थी। कहते हैं कि बड़ा ताल टप्पाकूलम जो नगर से डेढ़ मील पुर्व की ओर है इसी राजा ने बनवाया था। यह ताल चौकोना है और उस के गिर्द कमरकटा बना है। बीच में एक चौकोर टापू है जिस में एक मन्दिर

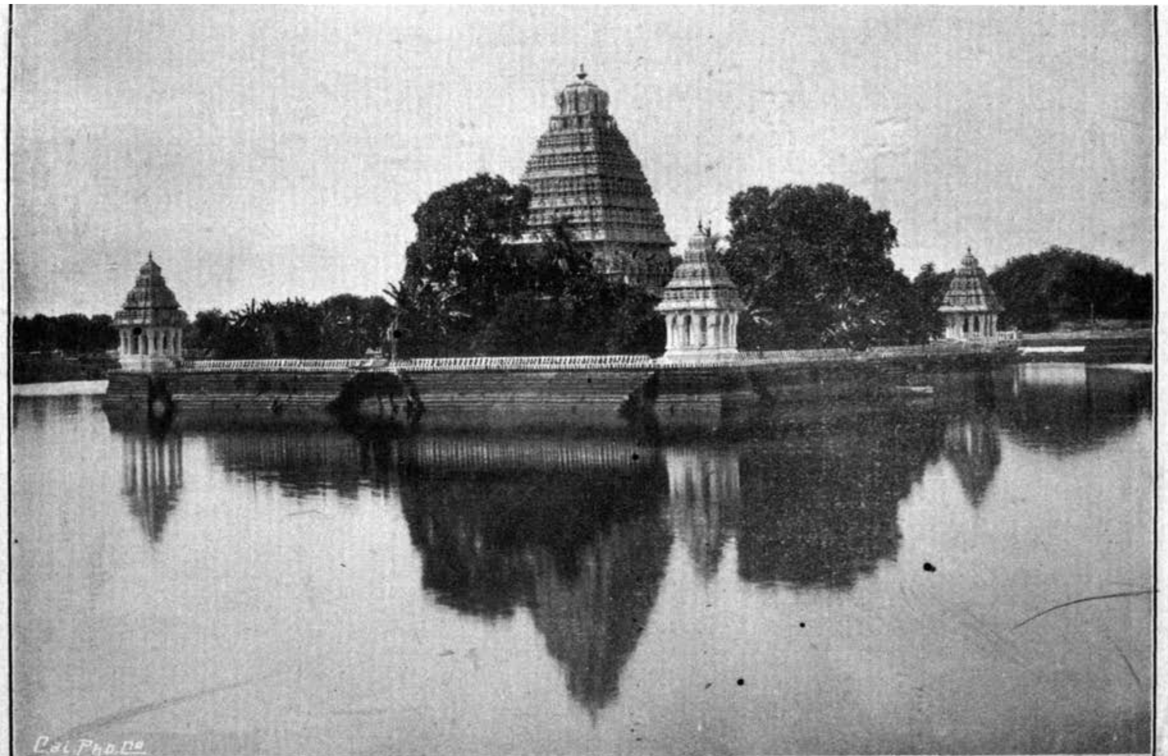


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

टप्पाकुलम ताल—मदूरा।

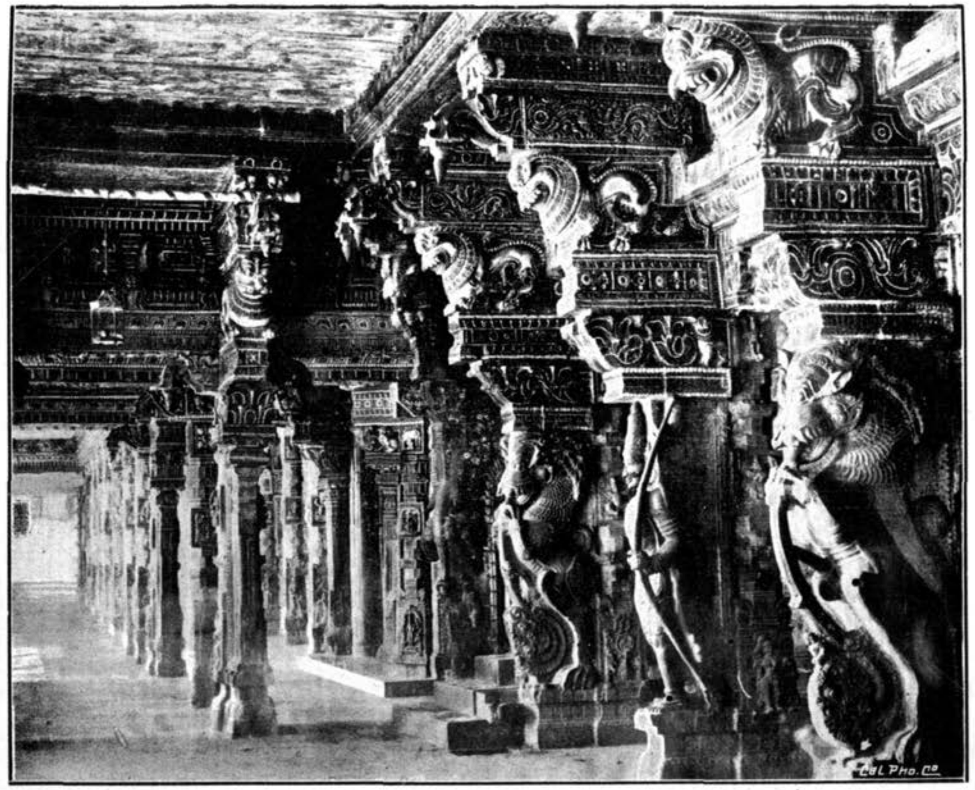


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

किलिकूदा मंतापम—मदूरा।



Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

शिव जी का बैल नांदी—मदूरा।



Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

महाबलीपुर सेवण पगोडा के रथ।

है और उसके कोनों पर स्थान बने हैं हर साल इस ताल पर जनवरी के महीने में एक दिन लाख दीवे जलाते हैं और देवता की मूर्ति को पगोडे से लाकर टप्पम या बेड़ी में बिठाकर इस ताल पर फिराते हैं इसी सबब से इस ताल का नाम टप्पाकुलम हो गया है ॥

मदुरा स्टेशन पर अंगरेजों और देशियों के लिये खाने के कमरे बने हैं, रामेश्वर जाने वाले यात्रियों को यहां गाड़ी बदलनी चाहिये ॥

महाबली पुरम या ७ पगोडे।

अहाता मद्रास के जिला चिंगलिपुत में गांव है। यह जगह प्राचीन वस्तुविद्या वालों के लिये दक्षिणी हिन्दुस्तान में सब से बढ़ कर अजीब है पुराने स्थानों के तीन हिस्से हो सके हैं, पहिले ५ रथ जो समुद्र के किनारे पर गांव के दक्षिण की तरफ है, दूसरे गांव के पश्चिम की तरफ १४ या १२ ऋषियों के खोहों के मन्दिर जिन में संगतराशी का एलोरा और अलिफन्टा की खोहों जैसा सुन्दर काम किया हुआ है और मूर्तियां बनी हुई हैं, तीसरे विष्णु और शिवजी के मन्दिर ॥

कोल साहेब लिखते हैं कि कृष्णजी के मन्तापम में इन्द्र आकाश के देवता की मूर्त्ति है जिस ने बाला राजा के पशुओं को मारुत या आंधी के देव से बचाने के लिये बायें हाथ पर बादलों को रोका हुआ है। उसके पास पशुओं की सेवा हो रही है और दूध दोह रहा है उस की दाहनी तरफ एक बछड़े की मूर्त्ती है जिसका सिर एक तरफ को झुका हुआ है और एक पैर आगे बढ़ा हुआ है वह मूर्त्ति बहुत सुन्दर है उत्तर की तरफ अर्जुन के तप करने की जगह है यह एक ६६ फीट लम्बी और ४३ फीट ऊंची चट्टान पर है।

फर्गूसन साहिब लिखते हैं कि वह सारे हिन्दुस्तान में सबसे अनूठी है॥

महाबलीपुर में और बहुत से पुराने स्थान हैं पर ५ रथों को कोई नहीं पहुंचता ॥

सड़क के किनारे पर पत्थर की एक चौलरी है और यहां दो चत्तरम, या धर्म्मशालाएं और एक बंगला भी है। चिंगलीपत में स्टेशन से २ फर्लाङ्ग के फासले पर एक धर्म्मशाला और ४ फर्लाङ्ग पर एक बंगला है ॥

चिंगलीपत जो साउथ इण्डियन रेलवे की अर्कोनाम चिंगलीपत ब्रांच पर स्टेशन है यहां से १८ मील है। चिंगलीपत का फासला मद्रास बीच जंकशन से ३७ मील है तीसरे दरजे का किराया।≈)। लगता है। चिंगलीपत में महाबलिपुरम जाने के लिये यक्के मिलते हैं अगर उसी दिन लौट आवें तो यक्के का किराया ५) लगता है पर रात को वहां ठहरें तो ४) और ज़ियादा लगते हैं ॥

महा स्थानगढ

बंगाल के ज़िला बोगरा में बोगरा नगर से ७ मील उत्तरकी ओर एक मन्दिर और मेले की जगह है। कहते हैं कि पहिले राजा परशुराम की जिस को ब्राह्मण विष्णु का छठा अवतार कहते हैं और जो २२ राजों पर राज करता था वह नगर राजधानी था आम लोग कहते हैं कि यह पर्शुराम बहुत पीछे हुआ और एक मुसलमान वली ने जिस का नाम शाह सुलतान हज़रत अवलिया था इस को मारा था। इस सबब से उस जगह की बाबत हिन्दुओं और मुसलमानों की बहुत सी बातें मशहूर हैं दोनों धर्म्मों के बहुत से स्थानों के खंडर हैं और यह जगह देर तक मुसलमानों में बहुत पवित्र समझी जाती थी ॥

दिल्ली के बादशाह ने ६५० एकड़ ज़मीन धर्म्मशाला को दी थी

जिस को डाके के हाकम ने पक्का कर दिया था अब भी इस ज़मीन की पैदावारी से बहुत से फकीर पलते हैं अग्रैल के महीने में एक मेला होता है जिस से १००) रुपया आमदनी होती है प्राचीन वस्तु विद्यावालों के लिये खोदने से बहुत सी पुरानी चीज़ें निकलती हैं महा स्थान गढ़ में सराय, धर्मशाला या बंगला कोई नहीं पर बोगरे में एक डाक बंगला है। बोगरे में बैलगाड़ियां और घोड़ा गाड़ियां भी किराये पर मिलती हैं। एक गाड़ी का किराया ४) लगता है॥

बोगरा ईस्टर्न बंगाल स्टेट रेलवे पर स्टेशन है इसका फासला कलकत्ते से २०६ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥७)॥ लगता है॥

महेजी।

जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन है। महेजी देवता का नामी मेला इस जगह १५ जनवरी को शुरु होकर ६ हफ्ते रहता है। मन्दिर में महेजी की बड़ी मूर्ति रक्खी हुई है॥

महेजी बम्बई से २४१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ३॥/) और सवारी गाड़ी में २॥) लगता है॥

महेश।

अहाता बंगाल के हुगली जिले में सिरामपुर के आस पास का नाम है वहां जगन्नाथ देवता के दो बड़े भारी मेले होते हैं एक स्नानयात्रा का मई में और दूसरा रथ यात्रा का उस से ६ दिन पीछे होता है। दूसरे मेले के मौके पर देवता को रथ में बिठाकर वल्लभपुर जो वहां से एक मील के फासले पर है ले जाते हैं और ८ दिन के बाद फिर ले आते हैं इन दिनों में ८ हज़ार के करीब यात्री आते हैं पर पहिले और आठवें दिन यात्री एक लाख के करीब होते हैं॥

सिरामपुर स्टेशन के पास बाबू दीनमोहन शाह की बनाई हुई धर्मशाला है जहां किराया कुछ नहीं लियाजाता और भोजन भी बिना दाम दिया जाता है ॥

सिरामपुर ईस्ट इण्डियन रेलवे में कलकत्ते से १२ मील है तीसरे दरजे का किराया ≶)॥ लगता है ॥

महोबा ।

सूबा आगरा और अवध के हमीरपुर ज़िले में नगर और जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन है । यहां के लोग कहते हैं कि इस जगह का नाम बड़े यज्ञमहोतसवा के सबब जो चन्द्रवर्मा ने अंगरेजी सम्वत ८०० के करीब अपनी माता की कमज़ोरी के सबब किया था महोबा होगया है । यह ब्योपार के लिये अच्छी जगह है और मदन सागर झील के किनारे जिस को चंदेल राजों ने बनायाथा बसा हुआ है और उस के तीन अलग अलग हिस्से हैं एक बीच की पहाड़ी के उत्तर की तरफ़ जिस को पुराना किला कहते हैं दूसरा पहाड़ी की चोटी के ऊपर जिस को अन्दर का किला कहते हैं और तीसरा पहाड़ी के दक्खिन में जो दरीबा कहलाता है । कमकम वह जगह है जहां चन्द्रवर्मा ने काल किया था और तलाओं की बाबत कहते हैं कि सब पवित्र दरियाओं का पानी इन में आता है । किला अब सारा टूटा पड़ा है परन्तु उस पर से पहाड़ियों और झील का बड़ा सुहावना नज़ारा दिखाई देता है । रुमादेवी के मन्दिर के दरवाजे के सामने मदनवर्मा का मुनारा है । तालाओं में से दो मिट्टी से बहुत भर गए हैं पर कीरत और मदन सागर जो ११ और १२ ई० सदी के बने हुए हैं अब तक पानी से भरे और गहरे हैं इन तलाओं के किनारों पर और उन के बीच में

टापुओं पर बहुत पुराने टूटे हुये मन्दिर और बड़ी बड़ी पत्थर की मूर्तियां हैं तालों के बाजूओं पर बहुत से सुन्दर मन्दिर हैं और ऊपर पहाड़ियों पर पहले राजों के घर हैं जहां वह गर्मी में ठंडी हवा खाने के लिये आकर रहा करते थे। मदन सागर के उत्तर के किनारे नगर बसा हुआ है पत्थर की सीढ़ियां बनी हैं और उन के किनारों पर मन्दिर बने हैं जैनियों के मन्दिरों और बुद्ध लोगों के कतबे भी हैं। मुसलमानों के मज़ारों में खानजहान की क़बर और एक मसजिद है॥

महोबा जायंट मजिस्ट्रेट का हैडकुआटर (सदर मुक़ाम) है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, मदरसा हस्पताल भी हैं।

महोबा जी० आई० पी० रेलवे की झांसी मनिकपुर शाख पर झांसी से ८६ मील है तीसरे दरजे का किराया १≈) लगता है॥

नगर में स्टेशन से २ या तीन मील के फ़ासले पर एक डाक बंगला और एक सराए है। स्टेशन पर तांगे और यक्के मिलते हैं किराया आप ठहराना पड़ता है॥

महोबा से पान बाहर बहुत जाते हैं

मखौरा।

अवध के ज़िला फ़ैज़ाबाद, तहसील अकबरपुर में परगणा है यहां के लोग मढ़हा और बिसवा नदियों के सबब इस को धाती कहते हैं और यह जगह बड़ी पवित्र मानी जाती है। कहते हैं कि यहां अंधा मुनी के पुत्र सरवण ऋषि की जब वह अपने प्यासे पिता के लिये पानी लेने आया तो राजा दशरथ ने उसे मृग समझ कर मारा था। अंधा मुनी ने राजा दशरथ को श्राप दिया और कहते हैं कि राम चन्द्र जी का बनवास इसी श्राप के सबब से हुआ था। हर साल

यहां एक मेला होता है जिस में ५ या ६ हज़ार लोग आते हैं मभौरे में सराये धर्मशाला या डाक बङ्गला नहीं लोगों को टिकने के लिये आप बंदोबस्त करना पड़ता है ॥

मभौरा अवध रुहेलखंड रेलवे के कटाहरी स्टेशन से ३ मील और अकबरपुर स्टेशन से १० मील है अकबरपुर में यक्के और बैल गाड़ियां मिलती हैं। यक्के का एक तरफ़ का किरया ॥।) और गाड़ी का १।) लगता है ॥

अकबरपुर लखनऊ से लूप याने शाख के रस्ते ११६ मील है तीसरे दरजे का किराया १।॰)॥ लगता है ॥

मकलीडरग ।

सदर्न मर्हट्टा रेलवे का स्टेशन और एक भयानक जगह में पाहाड़ी क़िले का नाम है जहां रीछ बहुत होते हैं थोड़ी दूर पूर्व की ओर दुगुमनहल्ली जंगल है वहां दिसम्बर में सब्रह्मान्या रथयात्रा का मेला होता है उस में हज़ारों लोग आते हैं ॥

मकलीडरग सदर्न मर्हट्टा रेलवे की बेज़वादा शाख पर है, इस का फ़ासला बेज़वादा से ४२० मील है और तीसरे दरजे का किराया ४।॰)॥ लगता है ।

मंदा ।

बंगाल के ज़िला राजशाही में अतरई दरिया के पश्चिमी किनारे पर एक गांव है। मार्च या अपरैल के महीने में रामनौमी के मौक़े पर विष्णु के छटे अवतार राम की यादगार में हर साल बड़ा भारी मेला होता है जिस में १५००० के क़रीब लोग आते हैं ॥

मंदा इस्टर्न बंगाल रेलवे पर संताहार स्टेशन से २७ मील राजशाही से ४० मील है इन दोनों जगह में मंदा जाने के लिये बैल गाड़ियां मिलती हैं ॥

सन्दा में कोई सराय या धर्मशाला नहीं पर यहां से ७ मील के फासले पर डिस्टरिक्ट बोर्ड का बना हुआ आश्रम है ॥

सन्ताहार सुलतानपुर बिहार ब्रांच का जंकशन भी है इस का फासला कलकत्ते से १८४ मील है तीसरे दरजे का किराया २।=)। लगता है ॥

मांडले ।

बर्मा देश में मांडले जिले का सदर मुकाम है और ईरावदी दरिया के पूर्वी किनारे से २ मील के फासले पर एक पहाड़ी के नीचे बसा हुआ है ॥

नगर चौकोर सूरत का है और हरतरफ से एक मील के करीब है। इस के गिर्द पक्की दीवाल बनी हुई है जो २६ फीट ऊंची और ३ फीट चौड़ी है। इस दीवाल में १२ दरवाज़े हैं और नगर के चारों तरफ एक गहरी और १०० फीट चौड़ी खाई है जिस में पानी सदा भरा रहता है खाई पर ५ पुल बने हुए हैं ॥

राजा का महल नगर के बीच में है इस का रुख पूर्व को है और इस के अन्दर बड़ा २६० फीट लम्बा दीवान आम है जिस में बेल बूटे का काम किया हुआ है यह दीवान एक १० फीट ऊंचे चबूतरे पर बना हुआ है ॥

बर्मा का सब से बड़ा पगोड़ा मांडले का पगोड़ा है जो अराकान पगोड़ा कहलाता है। इस में बुद्ध की कांसी की मूर्ति है जिस की बाबत कहते हैं कि सन् १७८४ ई० में अकनयाव से लाई गई थी यह मन्दिर बर्मा देश में सब मन्दिरों से सुन्दर है और सारा दिन

लोग बुद्ध की पूजा करते हैं और भजन गाते हैं। हजारों बत्तियां इस मन्दिर में जलती हैं॥

मांडले रंगून से ३८६ मील है तीसरे दरजे का किराया ६)॥ लगता है॥

मणधाटा।

राजपूताना मालवा रेलवे के मुर्तक्का स्टेशन से ७ मील है। स्टेशन से इस नगर को अच्छी सड़क जाती है॥

मणधाटा मुमालिक मुतवस्सत (मध्य देश) के नामर ज़िले में नर्बदा दरया के अन्दर एक टापू है और प्रसिद्ध मन्दिरों के सबब बड़ा नामी है। नर्बदा के दक्खिनी किनारे पर अमरेश्वर टापू के ओंकार देवता के सारे मन्दिर शिवजी के मन्दिर कहलाते हैं। नर्बदा खण्ड में जो स्कन्दपुराण का हिस्सा है लिखा है कि इस टापू को पहले वैडूरियामनी पर्बत कहते थे पर सूर्य बंश के सतरहवें राजा मन्धात्री ने ओंकार देवता का बडा यज्ञ किया था और देवता ने दान में यह नगर राजा को दिया इस सबब से इसका नाम मणधाटा हो गया। यहां विष्णु के भी कई मन्दिर हैं और एक झुण्ड जैनियों के मन्दिरों का है॥

ओंकार जी का बड़ा भारी मेला १५ कार्तिक (अकतूबर के आखीर) में होता है जिसमें १५००० के करीब यात्री देश के सब खण्डों से आते हैं

नर्बदा के यात्री कहते हैं कि यह दरया सब दरयाओं से पवित्र है और सिधपुर के पास सरस्वती में तीन दिन, जमना में ७ दिन और गंगा जी में एक दिन स्नान करने से पाप नष्ट होते हैं पर नर्बदा के दर्शन करने से ही पाप दूर हो जाते हैं और कहते हैं कि

कलियुग के ५००० वर्ष सन् १८६५ में पूरे हो गए और नर्बदा गंगाजी से जियादा पवित्र होगया और गंगाजी का उत्तर का किनारा पवित्र है पर नर्बदा ३० मील उत्तर की ओर और १८ मील दक्खिन की ओर पवित्र है नर्बदा के किनारे पर सौगन्द बड़ी पक्की समझी जाती हैं ॥

मोर्तक्का राजपूताना मालवा रेलवे में अजमेर शहर से ३५६ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।=) लगता है। मोर्तक्का में मणधाटा जानेके लिये बैल गाड़ियां मिल सक्ती हैं। और मणधाटा में एक धर्मशाला भी है पर लोग प्रोहतों के घरों में ठहरते हैं ॥

मंगला गिरी ।

अर्थात् सुख का पर्व्वत। गण्टूर तालुक का नगर और सदर्न मरहट्टा रेलवे का स्टेशन है। इस में नरसिंह स्वामी के दो नामी मन्दिर हैं जिन में से एक बहुत पुराना है और दो मंज़िल का है दूसरा बहुत पुराना नहीं पर उसका गपूरा बहुत सुन्दर है यहां एक बड़ा और गहरा हौज़ है जिसका पानी १८३२ में निकाला था तो दस हज़ार बन्दूकें निकलीं थीं इस गांव में एक बंगला भी है ॥

मंगलागिरी सदर्न मरहट्टा रेलवे की बेज़वादा बंगलोर शाखा पर स्टेशन है। इसका फासला बेज़वादा से ७ मील है तीसरे दरजे का किराया -)। लगता है ॥

मनीमाजरा ।

सूबा पंजाब के ज़िला अम्बाला तहसील खरड़ में नगर है जो अम्बाला शहर से २३ मील उत्तर की तरफ एक पहाड़ी के

नीचे बसा हुआ है। सिक्खों से पहिले इस नगर का हाल मालूम नहीं। मुगलों के राज्य के बिगड़ने पर सिक्खों के सरदार गरीबदास ने जो मुसलमानों की तरफ से अफ़सर माल था ८४ गांव दबालिये और मनीमाजरे को अपनी राजधानी बनाया उस ने पिंजौर पर भी कबज़ा कर लिया था पर उस को राजा पटियाला ने उस से छीन लिया। गरीबदास के बाद उसका पुत्र गोपालसिंह गद्दी पर बैठा और भगवानसिंह के बाद रियासत अंग्रेज़ों के पास आगई॥

मनीमाजरा के पास मनसा देवी का मन्दिर है जहां हज़ारों यात्री आते हैं यह मन्दिर पहले नाहन रियासत में था पर एक दफ़ा मनीमाजरा के राजा को सुपने में मालूम हुआ कि पहाड़ी लोग मन्दिर का पानी रोक रहे हैं उसने इस का बन्दोबस्त कर के फिर मन्दिर को मनीमाजरे में बना दिया॥

मन्दिर के चढ़ावों का रुपया राजा को मिलता था॥

बांस की चीज़ें और चक्की के पाट मनीमाजरा में बनते हैं। अदरक और मसाले का व्योपार होता है॥

अम्बाला शहर लाहौर से १८२ मील और दिल्ली से १६७ मील है तीसरे दरजे का किराया २=)। और १॥=)। लगता है॥

मनमाद।

जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन और धोन्द मनमाद शाख और हैदराबाद गोदावरी वैली रेलवे का जंकशन है स्टेशन पर वेटिंग और रिफरेशमेण्टरूम अर्थात् मुसाफिर खाने और खाने के कमरे बने हुए हैं और पास डाक बंगला बना हुआहै। हैदराबाद गोदावरी वैली रेलवे दौलतआबाद के बीच में से जाती है जहां से एलोरा की खोहें चार मील हैं वहां जाने के लिये दौलतआबाद में

सवारी मिलती है एलोरा की खोहों के मन्दिर गिनती में ३० हैं और उन में कैलाश का नामी मन्दिर है। मनमाद की आबहवा बहुत अच्छी है और सरकारी सड़क जो माली गांव से अहमदाबाद को जाती है मनमाद के बीच में से जाती है। अंकई तकिया क़िला जो एक ८०० फीट ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है स्टेशन से ४ मील है इस पर चढ़ते हुए रस्ते में कई अनूठे मन्दिर और खोहें मिलती हैं और चोटी पर एक मुसलमानों के क़िले के खण्डर हैं। कई निर्मल पानी के तालाब भी हैं स्टेशन के दक्खिन की ओर एक अलग पहाड़ी पर एक चौकोनियां लाठ आप से आप बनी हुई है जिस को लोग राम-गुलहनी कहते हैं॥

मनमाद स्टेशन से १८ मील के करीब एक नगर चंदोर है जो चंदोर तालुक का सदर मुकाम है। यहां एक बड़ा दरा है जो खांदेश से दक्खिन को जाता है। चन्दोर में एक पुराना किला। टकसाल दो और किले जिन को इन्दराई वदी और राजदार वदी कहते हैं और नामी अहल्या बाई हुलकर का महल देखने लायक हैं।

मनमाद जी० आई० पी० रेलवे में बम्बई से १६२ मील है। तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २॥-) और सवारी गाड़ी में १॥) लगता है॥

मंतसाला।

मदरास अहाते के ज़िला बिलारी में एक छोटा सा गांव है जो एक महात्मा श्रीरघुचंद्रा स्वामी की समाध के सबब बड़ा नामी हो गया है। समाध पर हर साल अगस्त के महीने में मेला होता है जिस में बम्बई, हैदराबाद रियासत और मैसूर से बहुत यात्री आते हैं। समाध के साथ माफ़ी की जमीन है॥

कहते हैं कि जब सरकार की तर्फ से ज़मीन के लेने का बखेड़ा हुआ तो यह महात्मा मनरो साहिब से बात चीत करने को समाध से बाहर निकल आये थे ॥

मनूर ।

मद्रास रेलवे का स्टेशन है । इस जगह थिरुनन्देश्वाडा स्वामी का मन्दिर है जिस के मई और दिसम्बर के महीनों में ब्रह्म ऊतशावम के मेले होते हैं थीरुवलंगदू जहां एक बड़ा नामी मन्दिर है इस स्टेशन से २ मील पश्चिम की ओर है ॥

मनूर मद्रास से ३४ मील है। तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ।=) लगता है ॥

मनूर और थीरुवलंगदू में कोई धर्मशाला नहीं लोगों को टिकने का आप बन्दोबस्त करना पड़ता है ॥

मरियम्मनकोविल ।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर स्टेशन है इसका फासला मद्रास बीच जंकशन से २२४ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥) लगता है

इस जगह दो बड़े मन्दिर हैं एक मरियामन का और दूसरा श्री कोठंदारामा स्वामी का अप्रैल और अगस्त के मेलों पर यात्री दूर दूर से आते हैं । देशी औरतों के लिये यहां रेशमी कपड़ा बहुत अच्छा बनता है ॥

मतंगा ।

जी० आई० पी० रेलवे की पूना रायचूर शाख पर स्टेशन है

इसका फासला बम्बई से ६ मील है तीसरे दरजे का किराया ⌐)॥ लगता है ॥

मतंगा में हर साल अषाढ (जुलाई) के महीने में एकादशी के मौके पर विथोबा देवता के मन्दिर का मेला होता है। मन्दिर के पास एक धर्म्मशाला और स्टेशन से थोड़ी दूर कोढ़ियों के लिये एक मकान बना हुआ है ॥

मायावर्म ।

अहाता मद्रास के ज़िला तंजोर में नगर और म्यूनिसीपैलटी है। यह नगर कावेरी दरया के किनारे पर साउथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है और हिन्दुओं की बड़ी तीर्थ की जगह है स्टेशन पर पहिले और दूसरे दरजे के मुसाफिरों के वास्ते वेटिंग रूम बना हुआ है और चौथाई मील के फासले पर एक बंगला है। और देशियों के लिये एक होटल भी है जिस में ⌐)॥ से ≈) तक एक वक्त का खाना मिलता है। मायावर्म में शिव जी और विष्णु के मन्दिर हैं। स्नान यात्रा का मेला अक्तूबर और नवम्बर में एक महीने तक होता है उस में तीस हज़ार से ४० हज़ार तक यात्री आते हैं। स्टेशन के पास सोथाकद में हर सोमवार के दिन एक मेला होता है। इस गांव से एक मील के फासले पर एक और गांव है जिसमें देशी औरतों के लिये कपड़ा बनता है। यहां से रेशम की कन्नी का कपड़ा बाहर जाता है। इस जगह डिप्टी कलकटर और मुनसिफ की कचहरियां भी हैं ॥

मायावर्म साउथ इण्डियन रेलवे पर मद्रास बीच जंकशन से १७७ मील है तीसरे दरजे का किराया ≈) लगता है ॥

मेरठ।

सूबा आगरा और अवध में ज़िला और कमिश्नरी मेरठ का सदर मुकाम है॥

ज़िले का सब से बड़ा नौचन्दी का मेला यहां मार्च के आख़ीर या अपरैल के शुरू में होता है जो ८ दिन रहता है इस मेले में ५० हज़ार के क़रीब लोग आते हैं। पहिले यह नये चन्द्रमा का मेला था पर १८८३ से माल मण्डी भी सरकार ने इसके साथ बढ़ादी जिससे मेला और भी अच्छा होगया॥

मेरठ में यह मुक़ाम देखने के लायक है—

(१) सूरजकुण्ड जो १७१४ में बना था इस को गंगा जी की नहर के पानी से भरते हैं। इसके किनारों पर छोटे २ मन्दिर धर्म्मशालायें और सतियों की छतरियां हैं॥

(२) बालेश्वरनाथ का मन्दिर ज़िले में सब से पुराना है और मुसलमानो के देश पर चढ़ाई करने के वक़्त का बना हुआ है।

(३) मनोहरनाथ का मन्दिर शाहजहान के राज्य में बना था ज़िले में सब से बड़ा है॥

(४) महेश्वर का पुराना मन्दिर जिसकी बाबत कहते हैं कि पाण्डव के सन्तान में से किसी ने बनाया था॥

छावनी शहर के उत्तर की ओर है कहते हैं कि इसकी ठण्डी सड़क हिन्दुस्तान देश में सब सड़कों से सुन्दर है यहां अंग्रेज़ो के कई सुन्दर मकान हैं॥

मेरठ में चने, चीनी और घी का बहुत व्योपार होता है और साबन, (गिलसरीन एक अंग्रेज़ी दवा का नाम है) मोम की बत्तियां टीन के कनस्तर बाहर जाते हैं॥

इस नगर में ६ धर्म्मशालाएं और ८ सराएं हैं। गंगा राम की धर्म्मशाला कसूर गंज में और रौनक सराये कम्बोह दरवाजे में स्टेशन से एक एक मील के फासले पर हैं। सवारी हर वक्त मिलती है॥

मेरठ से अच्छी पक्की सड़कें गाजीआबाद, दिल्ली, सहारनपुर गढ़मुक्तेश्वर, बिजनौर को जाती हैं॥

मेरठ शहर दिल्ली से ४१ मील है तीसरे दरजे का किराया।⇗)॥। लगता है॥

मेलाघाट।

सूबा आगरा और अवध के जिले नैनीताल और परगना बिल्हेरी में गांव हैं। नवम्बर के शुरू में सरदा दरया के किनारे पर यहां हर साल ४ दिन तक मेला होता है जिस में ४० हजार के करीब लोग दरया में स्नान करने के लिये आते हैं। काशीपुर के मेले की तरह यहां भी उन दिनों में बड़ा व्योपार होता है॥

मेला घाट को जाने के लिये रुहेलखण्ड कुमाऊं रेलवे का काठगोदाम स्टेशन पास है और वहां नैनीताल जाने के लिये तांगे और यक्के मिलते हैं॥

काठगोदाम बरेली से ६६ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥) लगता है॥

मिर्जापुर।

मिर्जापुर जिले का सदर मुकाम और ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन है इसका फासला कलकत्ते से ४५८ मील है यह नगर गंगा जी के दक्खिनी किनारे पर बसा हुआ है और यहां का नहाने का घाट देखने के लायक है। यहां लाख बाहर से बहुत आती है

और इस जगह के गलीचे बहुत मशहूर हैं । पीतल के बर्तन भी बनते हैं ॥

बिन्धाचल स्टेशन के खुलने से पहिले यात्री लोग गंगा जी में स्नान करने और बिन्धाचल के मन्दिर के दर्शन करने के लिये इस जगह रेल में उतरा करते थे ॥

मिर्जापुर में एक डाक बंगला और लाला भैरूमल की बनाई हुई धर्मशाला भी है ॥

कलकत्ते से मिर्जापुर तक तीसरे दरजे का किराया ४॥०) लगता है ॥

मिसरिख ।

अवध के जिला सीतापुर में नगर और मिसरिख तहसील का दर मुकाम है और सीतापुर से हरदोई को जो सड़क जाती है उसपर सीतापुर से १३ मील के फासले पर वाके है अवध में यह बहुत पुराना नगर है और कहते हैं कि इसका नाम संस्कृत के शब्द मिश्रित अर्थात् मिले हुए से निकला है । क्योंकि कहते हैं कि हिन्दुस्तान देश के सब तीर्थों का पानी यहां लाकर ताल में मिलाया गया था ॥

कर्नल सलीमान साहिब लिखते हैं कि मिसरिख में किसी युग में एक महात्मा जिन का नाम दधीच था यहां रहा करते थे और उन के सबब से यह नगर बहुत मशहूर है । एक दफा देवताओं और राक्षसों में बड़ा भारी लड़ाई हुई जिन में देवताओं की हार हुई उन्हों ने बर्फानी पर्वत पर जाकर ब्रह्मा से मदद मांगी, ब्रह्मा ने कहा कि मिसरिख जाओ और दधीच की हड्डियों के हथ्यार बनाओ जब देवता मिसरिख पहुंचे तो दधीच को चंगा भला पाया पर उन्हों

ने ब्रह्मा का हुक्म उसको सुना दिया। दधीच ने कहा कि बड़ी खुशी है कि मेरी हड्डियां ऐसे अच्छे काम आवैं पर मैंने बचन किया हुआ है कि मरने से पहिले हिन्दुस्तान के सब तीर्थों में स्नान करूंगा और मुझको अपना बचन पूरा करना चाहिये देवताओं ने इन्द्र देवता से कहा और इन्द्र ने बृहस्पति से पूछा बृहस्पति ने कहा कि ब्रह्मा ने आप सब तीर्थों के दूत नीमसार के इर्द गिर्द बसाये हुये हैं और देवता सब तीर्थों का पानी लाकर दधीच महात्मा पर छिड़कें देवताओं ने ऐसाही किया और जब दधीच का बचन पूरा होगया उसने प्राण छोड़ दिये देवताओं ने उसकी हड्डियों के हथियार बना कर राक्षसों पर चढ़ाई की, और लड़ाई मार ली॥

यहां का ताल बड़ा पुराना है। सौ साल से ऊपर हुये मरहट्टा राजा ने घाटों की मरम्मत कराई थी इस के किनारे पर दधीच ऋषिका पुराना मन्दिर है जिसका हरसाल होली के मौके पर मेला होता है मेले के दिनों में ब्योपार भी बहुत होता.है॥

मिसरिख में मुसाफिरों के लिये एक सराय है और ब्राह्मण यत्रियों की खातिर करते हैं॥

सीतापुर रुहेलखण्ड रेलवे के रस्ते लखनऊ से ५५ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥~)। लगता है। मिसरिख जाने के लिये सीतापुर में सवारी मिलती है॥

मुंघेर।

जिला मुंघेर का सदर मुकाम है यह बड़ा नगर गंगा जी के दाहिने किनारे पर बसा हुआ है। और समुन्दर से ३० फुट ऊंचा है यहां की आबहवा बहुत अच्छी है। स्टेशन से ३ मील के करीब सीताकुण्ड में गर्मपानी के सोते हैं जहां हिन्दू यात्री बहुत जाते हैं। यह